

पुष्प भागवत

शानक

आशा भट्टा

2.115

ASHA ARCHIVES

शान

ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ पुनश्च निजसावित्री जे ला काधियवि पुजू । नाना भक्त
इव वक्ष्ये राजनीति समुच्चयं ॥ १ ॥ अथि ह्येवमिदं भक्तं न ज्ञा ह्यनिन लवना ॥ ४
मोपदं विनयं काया कार्ये गुणगुरं ॥ २ ॥ दैनेह संस्य वक्ष्यामि न ज्ञा त्महि ॥ १
न काम्याया । येन ये ह्यप वक्ष्ये न मानव हिन का पिनी ॥ ३ ॥ मूलसं जे पुव क्षामि
शान केन गुण विनी । येन विहाने मा गेन स वै ह्यल हि जाय न ॥ ४ ॥ मुखे निशा
पद एन द्रव्या मिह जल न व । द्विषणी संयथा एन पतिना य वसी दनि ॥ ५ ॥
उनिहिः सह संपक्के पतिनेः सह संकथा । कूलि हि सह मिश्र लं कृ बो ल्म ना व

सी दनि ॥ ६ ॥ उमलानी जूर्ज भनी मद्यपा नी च दनि ना । मिहं राज कृ ला र्वे नो विष्ण
संनिग ना यूख ॥ ७ ॥ वे निहं सह विष्ण सं यान ज ४ क र्मु मि द्रु नि । स व क्षा ग ब्रु सं सफ
पनिन ४ पुनि वृक्ष न ॥ ८ ॥ धन धान्य ४ पुथा रा ब्रु विधा सं गुह न ब्रु व । आ हा रे वा व हा जे ब्रु
ल कूल ऊ सदा रु व न ॥ ९ ॥ न गु जू ४ सद नी मा ना न गु जू ४ सद नी पि ना । य स्मा ज नि स हा धा र्ज
सं सा पा द वि द्रु र्ज ॥ १० ॥ मा ना नी भ स म नी र्थ पि ना पू र्ज न भ व द । गु जू ४ के दा ज स म नी र्थ
मा ना नी भ पू न ४ पू न ॥ ११ ॥ विधा च र्प कृ जू पा नी । रु मा च र्प न प वि नी । का किला ना ख र्प
जू र्प ना नी जू र्प पु नि व ना ॥ १२ ॥ न च विधा स मा व न्धू न च वा धि स मा नि पू श न वा प

एतस्मिन् न च देवा एतन् वचनं ॥ ॥ विद्याय वा सिनामिर्गुं रायामिर्गुं हृषूच । आहुल
 शोख च मिर्गुं धर्ममिर्गुं पञ्चगव ॥ ॥ दृष्टा श्रीगोवीर्षं विद्याञ्जली ह्युक्तं न विद्या
 विद्यामहीद निदस्य वृद्धस्य नृपुही विद्या ॥ ॥ अनायासे हेना विद्या निरुहो हेना २
 मिया । कवीर्ये महर्गं कर्तुं रुत दाषे हेना नृप ॥ ॥ यस्य पूजा न विद्या सां न भुला न वप
 छिन् । अथ कालं कर्तुं न हं न वचनं देव सवैरी ॥ ॥ सर्वे श्री दीपक लब्धु प्र राने न विदीप
 का । गेला का दीप का धर्म सु पूगं कूल दीपक ॥ ॥ जनना वयु न ना वयमु विद्याय
 यं कृति । अने दा ना रयणा ना पञ्च न पि नृप ॥ ॥ गुप्ता पत्नी जाज पत्नी

मिगु पत्नी नथे वच । पत्नी मा ना सुमा ना च पञ्च न मा नृप ॥ ॥ लालयेत्यं
 वयो मिद न वयो निना जय नृ । स्या फे श्री जल वयं पूगमिर्गुं स मा च नृ ॥ ॥ ला
 लना न द्रहवा दाषा ॥ ना जना द्रहवा गु क्षा । न स्मा त्युं वलि श्री व ना जय ले गु लाल
 यन ॥ ॥ अचिल त्या स या त्या गां पु ह्या या किं प या ज न । ना वृ शी यदि न त्या गां पु ह्या या
 किं प या ज न ॥ ॥ पूजा मु वि वि (ये ४ म म) नि या झा से न न वृ (ये) नी नि ह्य वृ द्वि स
 य नृ रु व नि ख ल पू जि ना ॥ ॥ प ० पू ग कि मा ल ग्व म प (७) रा ज वा रु क । य ० न ४
 पू जि ना जा जा प थ पू ग दि न दि न ॥ ॥ गु (७) वृ किय नी य ल कि मा न प पु या

जनं। विक्रियं न च धर्मः। रिणवः कीचविवर्जितः॥ न च स्यात्तु न च पूर्वः, च यस्या
 रूपं न भुवः। भुवः स्यात्तु न च हानं, हानं स्यात्तु न च नृमा॥ भुवः च धर्मिमा पूर्वः, नीलं च
 च सिमा कूल। सिद्धिं च सिमा विद्या, रागं च च सिमा धर्मः॥ ॥ अत्र न स्यात्तु न च पूर्वः, अणी
 लस्य हनं कूलं। अत्रिद्धिं च हनं विद्या, अत्रागं स्यात्तु न च धर्मः॥ ॥ भुवः च हनं च पूर्वः, नीलं
 हनं च कूलं। सिद्धिं च हनं विद्या, रागं च हनं च धर्मः॥ सुकूलं चो जयं च कन्यां, पु
 न विद्यां सुया जयं। यानं चो जयं सु, मित्रं च मम निशा जयं॥ ॥ ना एव निखं चो
 मयू, नो मिनिर्मयं सानं च। यवसायं सहायानां, ना निपातं महादधि॥ ॥ कनच

३

नदं न, यदमं का रूपं दवा। अत्र न च दिवर्जं कुर्या, दाना धय न कर्म सु॥ ॥ या जना
 नां सुहृन्मात्रि, वज्रानि पि पीलिका। अत्र न च न को पि, देयं च न नगं च ति॥ ॥ न च पथां ४ न
 न विद्या, न च ४ प वं न मा च हा। न च च मम स्या कामं, या यो मम न न न॥ ॥ अत्र सु च यया
 विद्या, यूरु केन च धनं न वा। अथ वा विद्यां विद्या, चतुर्थं नाप च स्यात्॥ ॥ न को द्वयं ४ प
 दानां चो भुवः नां हिमं न च। अत्र न च नानां नानां नानां, चाक्षु लं च पि जयं॥ ॥ यूरु कं च यय
 या धीनं, ना धीनं भुवः स निष्को। न च स्यात्तु न च स्यात्तु, जापं च स्यात्तु च वक्रियः॥ ॥ न लिपि
 लमना लम्पं, यमि लं मित्रं स्यात्तु। अत्र न च हनं विद्या, यत्र न च अत्र न च विद्या, न हि ज

नानि श्वत्वं, श्वत्वं गुणमूर्धना गुणाहुर्द्वानलं यानि, पथा दधिद्युर्नयथा ॥ ॥ किं कू
 लं न विष्मलं न गुणवान् यजिमानः । अनर्ध्वं विष्मलं विष्मलं निष्ठे दृष्टिं कपिष्ठाणि ॥ ॥ किं कू
 लं न विष्मलं न विद्याहीनं मया नय । अकूलिनाऽपि विद्वांसा देवनेनापि पूज्यं ॥ ॥ नावा ८
 था वरुव विद्याया वत्या च न गच्छति । उलीख्य गगनाय नो कार्या किं प्रयाजनं ॥ ॥ गुण ८
 वेणु पूज्यं विरुव लभनि पथे का । वासु देवनमस्य निरुव देवन कंजना ॥ ॥ गुण ८
 निद्रुत्वं इयपि वसनासनं । कटकी गन्धमाघाय स्वयं गच्छति वृषदा ॥ ॥ विद्यात्वं
 नयत्वं न हि गुल्यपचाक्रम । स्वदण पूजिनी योजा विद्या सर्वगुपूजिने ॥ ॥ न केना

पिसुपूज्यं विद्याय कनसाधना । कूलं पूज्यं सिद्धं नृद्वले वय काष्ठं ॥ ॥ विद्याया ८ राजर्न
 कश्चिन् कश्चिद्दुष्टं स राजर्न । उर्या राजर्न कश्चिन् कश्चित्ता रय राजर्न ॥ ॥ नमस्ति रुति
 ना वृक्षा नमस्ति गु विनाजना । पुष्पका र्खं वमस्व ॥ ॥ रिद्यन नयमन्यं ॥ ॥ न हि कम्मा नि वत्ता
 पि सुखं कालनियाजयत् । होत्रो नाम धूर्न निजा नथास्त्रो यम वद ॥ ॥ अहं वा ज्ञाय नथा
 विगेहो कृपय जागा अला श्री कस्य सयोया सपा नदायुष ८ द्रुय ॥ ॥ वेद वेदाङ्ग न लक्ष्म
 प हो मप नायन । आनि बो दप ना निरी न व ना ह्य पया हिने ॥ ॥ प्रह्लासि त्वम हीया ल ८
 शिद कम्मे विवक्तिन । विद्रु वप रि त्या गी सम दृष्टं सम ८ सुखं ॥ ॥ कूल शाल गु ण

पंगसह धर्मपयाय न। प्रवीनयस लाद रु जाऊ अ का विधीय न॥ ॥ कु रीयस निनल
 ई अंगे गे रे सदा जे व। अ नोय यय क को रू ना विप र्ण नियो जय॥ ॥ मूल व लिहि ना को न सु वने
 लय पी कू क। उ वि ष य व सा री व धर्म अ का विधीय न॥ ॥ आय वे द कू ना स्या स ४ सर्व ह ॥ ५
 प्रिय द गे न। आय पी ल उ म्म य नं ने व द का विधीय न॥ ॥ पिरु पि ना म हा द रु ४ म्म मु ह
 मि स पा व क। उ वि ष क ० न ले व स प का न ४ पु ग थ न॥ ॥ सकृ द कू ग ही ना थ
 ल घु रु रु जि ना कू प। सर्व म्म मु स मा ला की न व ल र वी क उ य न॥ ॥ ॐ कि ना का न त व ह
 व ल वा प्रिय द गे न। अ पु मा दी स दा द रु पु नी ह न ४ स उ य न॥ ॥ सम रु क न म्म रु ४

पद्मि न वृ जि ना प्रो म। ले य सो र्य उ म्म य न र ना अ का विधीय न॥ ॥ सम रु ह य म्म रु वा
 ह न वृ प जा जि न। म्म ये वी र्य उ म्म य न अ म्म अ का विधीय न॥ ॥ म्म वी वा क दृ ष्य रु प
 वि ला प ज कू क। धा जा ऊ थ क वा दी व न व दू ना विधीय न॥ ॥ पा थि व स य रु ए स्य व दामि
 उ न ल रु र्ण। य न सं व द न जा जा ह म्म म नि रु थि व व॥ ॥ अ न उ व कू ली ना नां द यां कू व नि
 सं ग ह। आ दि म्म व म्म ने न न ग या स्य नि वि क्रि या॥ ॥ प द्मि न वृ उ म्म ४ सर्व म्म दार वा मु
 क व लो म्म म्म र्ख स रु म्म दा प्रा ह न क थु ग थ न॥ ॥ पु रु नि या अ मा न नु स नि नो म्म या उ म्म
 । य स ४ स र्ग नि वा स ४ पु रु ल ४ ध ना ग म॥ ॥ म्म नि या अ मा न नु य या दा वा म ही व ना

॥ अर्थेणार्थनामध्वनयकवदनं न्युर्वी ॥ ॥ गृह्णामाहूमीतिवानिर्णयं धर्मो कामार्थवृद्धयः ॥ ७
 ब्रवन्कनिया अर्कं उद्यहीनं विवर्जयेत् ॥ ॥ यत्किं किं कुरुत्यहं एतत्वाय दिवा ॥ ८
 ननसं वदन् न जाजा सु कर्णे दूस्तेन जपि ॥ ॥ यथा हर्मय जीह्वं गोपनाय न दूदने ॥ गंधा ॥ ९
 यूपयमप्ययं कूलं नीलं न कर्मदा ॥ ॥ ह्यनवायं कृच्छ्रहृत्वा वा न्यवायं सना गमा आ
 प्रकीर्णं न धामिर्गुलायां च विरुवक्ष्ये ॥ ॥ हृत्वा वदुर्विधा जाजान् उरुमाधममध्वमा ॥
 ननिया आयाथायां मि विवृकवनामसु ॥ ॥ आलभ्य आलकुर्न रुद्धं यस्मिन्नं ॥ १० ॥ अ
 संगुहं मरु कृच्छ्रं एतद्गुह्यं न जायिष्ये ॥ ॥ एतद्गुह्यं मि नमस्य गु मस्य गु कपनं एतद्गुह्यं

कृपनादविष्णुब्रह्मगमाच्च कृगनामनं ॥ ॥ वामाक्ष्योसूनामस्य प्रथकावाञ्छिवा न का
 निस्तहा वन्द्यवर्गस्य एतदस्य महत्सुखं ॥ ॥ न कश्चित्कस्य विस्मिर्गु न कश्चित्कस्य वि
 रुपियः ॥ काउ ह्यदवजायन्ते मिश्रानि नियवस्तथा ॥ ॥ कायाथो रुजगला क नला क
 ॥ येन माधो न ॥ वस्तु ॥ क्षीरक्षयं दृष्ट्वा परिहृज्य मिमांसा ॥ ॥ कृणा वासनि नानि डा
 अरुफस्य कृणा जमि ॥ कृगसो र्वदप्रिदस्य दूजेनस्य कृणा क्षमा ॥ ॥ गृह्णामाहूमीतिवानिर्णयं धर्मो कामार्थवृद्धयः ॥
 दूजेनस्य कृगक्षमा ॥ वेधमो क्षी कृगसो ह्यो कृगस्य क्षमा मिनी ॥ ॥ दूवेनस्य वलं जाजा
 वाला ना पुदिर्ग वलं ॥ वलं मुखस्य मो नले ॥ वो धममनर्ग वलं ॥ ॥ अनाथा नादविडा क्षी
 ॥ ॥

वालवृद्धनपथिनां। अन्धायपतिरुगानां सर्वस्यापार्थिवानि॥ ॥ वाचिगस्यार्थही
 नस्य शुक्ररिगसिगस्यव। हृदयभक्तदयस्य सुहृदगनमोवर्ध॥ ॥ अगुलस्यनय
 फडहिरेणगुविग्रह। जाडहायसमभनवायसिर्वगिसवान्धवा॥ ॥ रावशुद्धिमनूषा
 धर्मज्ञानार्थसर्वकमस्य। रावनवृविनाकान्ता रावनदहिगानना॥ ॥ नंदवाविद्यनकोष्ठ
 पाषाणनवमत्सय। रावेषुविद्यनदवसुसा रावामहेरुन॥ ॥ शिष्यार्त्तदवतावायो ह
 नमाचार्यदवगा। दवतायाषिगारुही वाक्मर्जनदवगा॥ ॥ विपुपथयथवक्ति जा
 चार्यपथदवगा। पृथापथयथामागमिगुपथयथसूत॥ ॥ उपपत्तिदिज्ञानी

१८
 नीवृक्षनीकलपुत्रपतिपकाउपुम्हीर्त्तं सर्वस्यागगाउपु॥ ॥ उरुमस्यापिवर्ध
 सनीवापिगृहमागगापूजनीयायथान्यार्थसर्वस्यागगाउपु॥ ॥ दवतापूजय
 रुक्ता रत्यादाननयूजयतुः। गूडपूजापयाय धविपा धर्ममहिवन्दन॥ ॥ धर्मस्यमूलं
 याजानीरुपामूलं श्रवाक्कर्मः। उक्कर्मयवपू अन्तर्गुधर्मसनागन॥ ॥ आचार्य
 रुलगधर्म आचार्यरुलगधर्मः। आचार्यरुलमाप्तानि आचार्यरुललक्ष्मी॥ ॥ रा
 र्त्तज्ञानैर्ज्ञेयं किञ्चपुमिगकिर्वेजस्यः। विरुवादानगकिञ्च नाल्यस्यनपस४रुलं॥
 ॥ वालवैवचयधर्ममानिखलूजीविर्गः। रुलानामपियक्तानां साधनपनरुवन्॥

ही गनगकु मगगु मूद्र जगुः। यादल ल ४ कप हन क धू के ने व क धू का ॥ वरुदमिगल
ल्य नया वला लविपययः न गे वमा गग काल विद्या वमिवासनि ॥ ॥ हे डि के क इ क
मह मधु पं कि नरा वसः। मधु पं वदसि कल्या ला कार्य मधु पं प्रिय ॥ जि का ल व स ग ल
श्री जि का ल मि ग वान्ध वाः। जि का ल वन्ध नं ॥ पि जि का ल म प दं धू व ॥ ॥ प्रिय वा क्य पु दा
न न स वे तु षा नि जान वः। गसा रु द व हान वं कि वा क्य पि द नि द ग ॥ ॥ अ पि दा ग न
द ल्ये व ग म्प या नि द ना प हाः। इ ग दा ना प्र हा नी य व ग न आ ग ना यि न ॥ ॥ अ ग ना यि न मा
या न्म पि व दान पा ग रं। जि दान् स ग जि दान् सी या न् न ग न व क्क हा रु वं ॥ ॥ ४। रा धु

यालयनं निरुं निरु धर्म प नाय द। नि डि गः प न स न्या नि प मि धर्म न या ल य र ॥
पृथं पृथं वि वि च मि मूल क्क दा ग का प य र ॥ माला का प र्वा ग मे नि य धा डाम नि सा च नां ॥
अ नि मि ग सु दा सि नां म धा रु क्क वि ना उ न्। या न वृ द्धा नि म न्दा त्मा स व स र्व गु न थ मि ॥ ॥ अ
ना य श्र व य कृ त्वा अ ना थ ४ क ल ह प्रिय। आ गु प स र्व रू द्दी व न ४ णी द्यं वि ना थ मि ॥ ॥ क
काल ४ का नि मि गानि का द ४ का व या ग म् क स्या ह का व म ग कि नि कि वि ना म र्द म् र्द ॥
सिं हा द कं व का द कं मि थ वृ त्वा नि कृ क्क दा र ॥ वा य सा त्य श्र मि थ ग व द स्या न्म मि नि
ग द हा र ॥ ॥ प रू ग का र्य म ल्य म्वा या न न क र्मु मि क्क नि। स र्वो प रू प न्का र्य मि हा

दकं विधीयते ॥ ॥ नृदियानिगुसंयम्य, वकवत्य निगुनय। कार्यकलापपन्नानि
 सर्वकार्यानि साधयन् ॥ पातुस्त्वन कृयुधक, सन्नितागक वन्ध्या। म्नीयोमाकम्यरु
 ङ्गि, निष्ठावत्वातिकृत्तुं दातु ॥ ॥ गुदमेधून धृष्टम्, कालेवालेपिसंग्रह। अपमादि १०
 सुधूरुं च, यंच निष्ठावत्वायसा ॥ ॥ वक्ता निवात्यसंगुह, सन्नितागवचनन। स्यामिरुका
 ष्वगुलस्य, वचनस्य नगागुह ॥ ॥ अविष्मन् वदद्वातं, गगलं कनविन्दनि, ससंगुहव
 त्तिर्य, नीनि निष्ठावत्वादेरातु ॥ ॥ विगणगुह ॥ ॥ पाका, यमुकृयादिवदन्। सङ्गानि
 नियन्सर्वान्, नजयश्चरविष्ठाति ॥ ॥ अमूखायामनूष्यान्, ससंगकवगता। यजस्य

याकापलपुंसां रुवविमिगुह ॥ ॥ नकादयः द्वयसिष्य, यत्र न किमहाभूवा। आसाहिना
 विनश्यन्ति, रुतुहमन्वयपदिष्ठा ॥ ॥ वासनसंगि कृवीनयेन कनापिसंहनि। सङ्गवा
 ननलभयुक्, पूजादाशयधियथा ॥ ॥ द्रुमपसागर्जनीन्, समगुं वानववर्ल। अरुगप
 वेनामन, संगुवन्ध्यासागपन् ॥ ॥ यूर्यगर्जययपुक्, विनाधकपयस्यन। यजनाक
 मेमानपि, वयपं आरुपंशर्ग ॥ ॥ हित्वाहित्वावदम्मानि, कृत्वावेममभनक। हानयः
 यवसायानि, यपयपयनवच ॥ ॥ विनाजोनामनूष्यान्, अश्वानामेधूनं कर्प। अग्ने
 लरुह नाम्नीन्, वस्तु धर्ममगपाकया ॥ ॥ अश्वजनामनूष्यान्, मनश्च वाजिनजयाः

अमेधूनं जजास्मीहं सन्मानं मेधूनं जजा॥ ॥ कक्षावृत्तिः यथाधीर्ना कक्षा वासा निपाठ्या॥
 रूगपूवोथसंयुक्तः सर्वकक्षादनिडगा॥ ॥ अथिगायाधिगामूर्खेऽयवासी पचं सवकः॥
 जीविनापिमनःपक्ष्णं पक्ष्णं नदृष्टवराणिनि॥ ॥ अहिमन्त्रमदासीनं गृहिणमपसवर्जि ११
 नं। पणिकूलकर्णं च नचकस्यापनाविधी॥ ॥ सुलज्जधायदापामलक्ष्मणः ॥ ११ दृग्म
 मिनः शयनकलीयदाशागा नदाने दृष्टवराणिनि॥ ॥ थायगुनिलमायागि, उक्तक्षपि
 दिनदिन। सगुलघूणां यानि, यक्षकसमानच॥ ॥ यचान्नं पचवस्तु, पचपाथं पच
 छियः पचस्ययगृहं वासं कस्यापि शिर्यं हचन॥ ॥ अग्नेयानि देना विद्वान्, अग्नेव
 चानेक

पूगवानचः अग्नेयाविधवानापी, पूगपोतुपमिष्ठिगा॥ ॥ विरवाः सर्वपूश्चक
 नशीपक्षदहिनः वाष्पुलाः पिनचः ॥ ११ ॥ यस्याहं विपुलं धनं॥ ॥ धनमाद्रुः पचं ध
 मा, धनेऽसर्वेऽयमिष्ठिगाः जीवन्ति धनिनालोकं, सत्वायत्वा धनौ नच॥ ॥ अग्निसम्यद
 मापनं, रूगवर्णयमाह्वयं अचग्निरवचापूद, सत्यं वक्तव्यपाणिना॥ ॥ कोहं रवाहं कानि
 र्णं कसूरानि च पाणिनां। यस्य रार्था एव संगुह्य, कचनस्यासर्वं गृहं॥ ॥ अग्नेरिदं कर्ष
 कानि र्णं, सूरवर्गं निमपाणिनां, रार्था वद्वर्षभयस्य, नस्य निर्यासर्वं गृहं॥ ॥ सर्वपचवर्ण
 दृष्टव, सर्वमात्मावर्णसूरव। नगदिद्यात्समासेन, लक्ष्मणं सूरवदृष्टव्या॥ ॥ सूरवस्यानन्तं च दृष्टव

॥ ४४ ॥ स्वस्थाननकपसूखे। सुखदृष्टमनूष्यान्म, यकवत्यनिवर्त्तन॥ ॥ विदूहि ४४ मूर्खसंघाते ज
 न्याये ४५ ॥ १२ ॥ वरिहिरि। क्वा दयनिष्ठु क्षात्सर्वी भये निवदिवा कप॥ ॥ असंगा सहसंजान कान
 याएधमागर्ग। पयापिसोधिनी हस्त मद्यमित्ति विधायन॥ ॥ असत्संपर्क दाषध अधमाया नि साध
 वामात्सुष्टुस्मिमास्य क समापि वि समायन॥ ॥ उरुमे ४४ सहसंजान कान जागिसमूननि।
 मृदा हस्तं निधाय क गुलिने ४४ सुमे ४४ ह॥ ॥ किं कनिषागिसं पर्क स्वरा वाद्री गकुमाप
 प्थमसुदलमध्याह्न कथाथानासुगांगन॥ ॥ मर्क जावसवन्धन मत्थ निम्वय निष्ठिना मधू
 कीपसमावृथी निम्व किं मधू जायन॥ ॥ पूरु कषूरया विद्या पनहस्त पू वद्धन। कार्य काल

१२

नसंप्राप नसाविद्यान गद्धन॥ ॥ द्रुपस्त्वनानिमिगादि निस्तुहानिचवान्ध वाध किं प्रया
 जन करुया मर्थिना निस्तुलानिव॥ ॥ अटथाद्रुमपूष्या निद्रुपस्त्वनिचवान्ध वा कार्य
 कालनसंप्राप य कालेनाप निष्ठिना॥ ॥ पुद्गा वचन हीनस्य कर्म हीनस्यथान पथानि पथव
 गनागस्य रसमन्याद्रुसयायथ॥ ॥ द्रुगयुद्धमविष्मद्रु दयथा कलहस्त धा वलापानिस्त
 लंजां नि प्रहागमघदम्वन॥ ॥ निस्तुला कृपना सेवा निस्तुलापनिचागुल दाषसंयूक
 मालस्य शुनिर्विप्रस्य निस्तुला॥ ॥ वयथ कुलजां पाह्य विप्रयामपि कन्य कां प्रयसिनी ननी
 यागु वेवा संसदस्तु कूल॥ ॥ विषादया मर्ग शुभ मम मध्या दपि का कर्न नीयादयस्तु

माविशां स्त्रीपत्नं दुर्लभं यि ॥ ॥ कस्य कूलनाम्नि वाधिना कानपि उने ४ केन न शसने
 पार्क प्रिया कस्य निपने ॥ ॥ दायायास्मि तुल्यस्मि निर्गुणपि जायने । सुकृमाल १३
 सयदस्य नालारुवगिकर्के ॥ ॥ अमर्गमिनिपवलि अमर्ग कीपराजनी । अमर्ग तुल्य
 वगिरायो अमर्गवाल राधिनी ॥ ॥ इल्लराप कानी वानी इल्लरमुदमीपु ४ इल्लरावस
 हलामी इल्लरुववर्नप्रिय ॥ ॥ नदीनां ऊर्ध्वविद्युक्षाना पीष्णं क्षयगिवगा । मनूष्या
 क्षन्तपयाद् दुर्लभा नां यगु निर्वृति ॥ ॥ पूगुपोगुसमाकीर्णं दाणा दसणमाकूलं । रायोविप
 हिर्ग ४ पुंसा यथापथं गथागृह ॥ ॥ सर्वेषां भवपत्नानां स्त्रीयापत्नमनूकर्म शगस्मा रुद

र्थनिवया गात्रकाधननकिं ॥ कूम्भीहनि कूगुम्भानि कूलग कूलहं न्यन ४ कूमन्ती
 हन्यन जाजा जादुवो यक्षहना ॥ ॥ स्त्रीर्षं दावसहसाहि तुल्यस्मि निमहीपेनाग
 हावापसुगात्यलि मज्जयगिनासह ४ ॥ कवय ४ किं नयथ किं किं नरुद निवायसा
 पुमदा किं न कूर्वे किं किं न उग मिमद्यपा ४ ॥ पूगुपयाजना हायो पूगु ४ पिधुपयाजना
 हिगपयाजना मिगु सर्वमात्मापयाजना ४ ॥ सम्रडावपक्षरूमि प्राकायावपक्षरहा
 नपेन्द्रावपक्ष देसा यपिगावपक्ष म्लीया ४ ॥ नगराणि नवासानि नपा कापानप
 रुका । नवन्ध्रानेव वंक्षवा सुगालाच कूलमिय ४ ॥ नदीपागयने कूलं नापीपागयने

कृत्वा शनारी धमक न दीनाकृत्वा सुन्दललिगा गमिशा लना पाएव सिर्ग व दं, रुख पाएव सि
 र्ग न प। पाएव सुं पृषया वि, इ वयनि न सं गयशा ने वय ग्य मिजा गान्ध, कामा ल्य १४
 ने वय ग्य मि। न प ग्य मि म दान्मा ला, अर्था दाषान व ग्य मिशा की धूम न न पृषा स्य न, हा र्याकृ
 गन जो वनं। उद्य ४ पुण्या गन गूल, स ग्य कृ गृह मा गन शा ल की ल द्वा ही छ व कृ ल ही न स
 प स नी। अया गु प म गे ना री, गि जो व र्य मि वा स व ४॥ यस्य रु र्या वि नृ पा की क ग्म ली क ल हः
 प्रिया। उरु पालन वा दी व, सा ज नान ज न ज न ४॥ यस्य रु र्या सु नृ पा व रु र्णो न म नृ ग्म मि
 नी। निर्ण म धू न रु र्णी व, सा प्रिया न प्रिया प्रिया ४॥ यस्य रु र्या गृह निर्ण गु णी व व नी ग

उमि । गस्य सीदन्कि गगनादि पद्मनी वहि मा गम ॥ ॥ यस्या गृहवराया व मागे वहि ग का पि ला । वद्धे
न गस्य गगनादि उक्ता पद्मयथा गगना ॥ किं जाने ४ व द्वा हि ४ पू गे । ॥ म क स का प का ज के ४ व र म के
कूलाल मी य गु वि ण्म म ग कूल ॥ ॥ न क रा या द य । पू ग ४ द ह लो द ग ॥ न वा क न्या काल व ग न
न न ग या स्य नि वि क्रियां ॥ ॥ न स या व ह वा पू ग ४ ग या म का य दि व ड न । य ड न वा गु म ॥ न नी ल
म्या व व मू त्सु ड न ॥ ॥ न क न गु ष्ठ वृ ष्ठ ४ द श माने न व द्धि ना ॥ द श ग न व न सर्व कृ पू ग ४ कूल य
था ॥ ॥ न क ना पि सु ४ वृ ष्ठ ४ पू ष्ठि न न स र्ग धि ना ४ वा सि र्ग न द न सर्व स पू ग ४ कूल य था ॥ ॥ य स्य पू
ग व ग म र स्या रा या वृ न्द न र म मि नी ४ वि व व ष्ठ पि स कु ष्ठ ॥ स र्ग न ग स्य म दि ग ले ॥ ॥ य पू ग ४ रु पि गु व

स्था ४ सपिनायाम्मु याव क ४ न निर्गु यगु विस्वास सार्यगु निवृ मि ४ ॥ यस्य जीवनी जिवन्मि
वियामिगु ४ वान्धवा ४ ॥ सरुलं जिविर्गनस्य आत्मा धका न जिवनी ४ ॥ ॥ स जीवन्मि ४ उ ॥ धाय १५
स्य यस्य धर्मो स जीवन्मि ४ न धर्मो विहितस्य नि सरुलं गस्य जीवन्मि ॥ ॥ वाचा सपस्य मियस्य ३
हायो पूयवनी सनी ४ लक्ष्मिणा गवयस्य सरुलं गस्य जीवनी ४ ॥ ॥ धर्मो धका ममाका धी यस्य का
विन विद्यते अज्ञा गवन्मस्य पि निपथे गस्य जिविर्ग ४ ॥ धर्मो सस्य विहितस्य दीनया निच वि
क्रिया ४ सलाह काल वमुद्य स्य लक्ष्मि वपु ष्य ग ४ ॥ गता पपि ४ धवा या दा या वा या ४ उ पा पपि
यू क्रियू कं ववा ग्रा नवरी ४ उ पू ल्मे प वा ग् ॥ ॥ अकलुषं न कलुषं प्राधि ४ कलुषं गे पपि =

कलुषं म व कलुषं पा ४ के धृ गे पपि ॥ ॥ १०० ॥ ॥ नू निवान कसाप स ४ द दिनी यसन
कसमाफ ॥ ॥ काल वपि पूना सन्धि काल वमिगु वान्धवा ॥ कार्य काल धा मा णि ४ काल द
यमि पधि ४ ॥ कल ४ प व निरुता नि काल ४ स ह ज ग पु डा ॥ काल ४ स फे वृ डा कि काला हि द्रु प मि
कमा ४ ॥ काला य पा ह ग वी डं रुलं काला त्या वरु न ॥ काल व वरु न ४ स हि पू न काला पि स
ह ज ग ४ ॥ ख जि ४ मे रु मि रा य ४ ॥ उ न्दा को न ल मा पू ग ॥ सर्व स ह ज ग काल स मा ल्का
लाम ह ग र ४ ॥ ॥ कि क लि ष्य नि व का व ४ ॥ गाय ग न विद्य ग ॥ न स ४ द प न क ग म ॥ उ ज क
कि क लि ष्य मि ४ ॥ क द लि व न म ४ ॥ व कि म न्द प या क म ॥ अ वि व र्क ज न लू न ॥ उ धा वा की

कपिष्ठाणि ॥ पलथरिन्नमर्यादा रुवमिकिलसागप। सागपाहदमिच्छुनि पलथापिनसा
ववशाभप्रपिगकल्यान्ममथर्यादसागपस्यव। पुगिपन्नमहासुखा नवलंगिकदाचन ॥ १७
विद्यगेमिष्वचपला विद्यगेवाक्कधनप। याल्पविद्यगेनीचदयासा धूयविद्यगे ॥ साधू
सन्मानमागुधरुवनिदहविकया। उपकापणननापि दुर्जनकनगच्छत ॥ धूयवाक्काः
निसामादि, नाधूय ॥ भममुवाधयन्नायस्यैपिकुनदाष, वद्धहीनानयस्थगिशा नालिकेल
रुलाकापा, दृष्टगेकपिसर्जना। अन्यपिवदलाकाया, वहिचवमनापमा ॥ चन्द्रनशीगर्ल
चन्द्र, चन्द्रननकुचन्द्रमा। चन्द्रचन्द्रनयाम्मे ॥ साधू ॥ संयक्कागर्ल ॥ अथमाधनमिच्छु

निष्पीमिमिच्छुनिमथमा। उरुमा ॥ मानमिच्छुनि, मनाहिमहगांधन ॥ मक्षिका ॥ वदामिच्छुनिः
धनमिच्छुनियार्थिवा। नीचा ॥ कपहनि, भमिमिच्छुनिसाधव ॥ भूगपाधमिमिच्छुनि, पुप
मिच्छुनिदानिका। हूगय ॥ कुलमिच्छुनि, स्रुतमिच्छुनिनायसा ॥ अतिकुरुन दृश्य, अन्नि
लारुनचसुख। पपपिजावायावृत्ति, नेवसाधूविद्यगे ॥ नसर्कनालरुन्याह, अकाः
र्यनेवकापयगासुख्यकार्यनक्रयाव, निरुलनेवसंवयगुशा। लिल, लेलनमानिकैः
भोकिर्कनगजगज। साधूवानहिसर्वगु, चन्द्रननवनवन ॥ पपकायधूयकात्मा, स्वका
यदियुसाधयगासुखलोयधूनिर्वहिल, नाजाकार्यधूविक्रम ॥ जललेखवनीयानां

यत्कृत्तं न न दृष्टं । अत्र लामपि साधुनी, लिला लखवनिष्ठ नि ॥ महामाया द ४ सन्नि स
हमा मपि सम्यद । नूनं यं मन्त्रा य, नाय दाने वसुधे द ॥ १॥ मूमु यानि वा केन वसुधे ॥ १॥
धवल्दमा । विष्णु ४ सम्यदमागुध, महानां कपसंयुटे ॥ लखक ४ पा ० कलेव यवा न्यमम
विनका । सर्वे ये सनिनामदा, क्रिया वक्तव्यपेक्षिण ॥ बको मम वा ईनि, नाज सवागपा
वर्न । श्रीया प्येत्वा पि कूर्च नि, कानना ४ कृषिवा हाका ॥ वज्र दना र्थावनि । ई, विद्यार्थी च
वदुर्ध्व । अगु कालमपराधा, मानार्थान्तरि वज्र ॥ मूर्ख यया दला का र्च, वाचा च
न्यन ॥ गली । हृदय क रिस्युर्ग, विविध धूल लक्ष्मी ॥ इर्जन ४ पियवा दी च, नैव वि

१०

असकालयन् । मधु १७ वनिजिक्का, ददिहालाहल विष ॥ खल ४ सर्वे यमागुधि, पचवृ
डाधियथ नि । अत्मना विलमागुधि, पथेन पि नय ॥ १॥ दधी नीया पथ मूर्ख, धन वक्त
११ निन्तु धा । इयस्मि पिवदृष्टं, किंशू का वृष्यि ना ॥ मूर्ख पियदे निरु वा, पुण्यका
दिपद ४ प १३ । रिद्यं न वाक् सत्य न, अदृष्टे कक्षे कथय ॥ १॥ सूर्य कृप ४ वन कूल ४ स्योग कृ
पग ४ खल । मन्त्रा वधी वस ४ स ॥ य, खल के ना प ११ मयन ॥ हस्ति हस्त सहस्र न ११ न
हस्त न वाजिन । ११ ह्नि नाद ११ हस्त न, दस एता ल न दूजेन ४ ॥ हस्ति नी कृ ११ हस्त, क ह
स्त न वाजिन । ११ गाल १३ उ हस्त न, खग हस्त न दूजेन ४ ॥ इर्जन ४ पचिहस्त, ११ मम ११

लं कृणायदि। मघिना लं कृण ४ सप्य, किम सो न रुय द्ध ४॥ पाण पाण वि। ण वध। ५ नृप न
 गयार्थ था। रु मा लि ४ गु वं ग की र्, की नालि मु वं ग वि र्थ ४॥ कु ड ग क मि नि म ला, ना प क र क १८
 दा व न। का ल द्रु ड न मा या गि, रु म र्द्ध व द्धि वी ज व ग ४॥ ष ष्ठी क क र क दा ष, आ सि नि म धू पि
 ग ल। ण र्ग का न र र्वा ण व, कृ पु स्या न न वि द्य ग ४॥ स्तान कू ड चा वा च मि ग म्भ ह य नि ए ऊ ग।
 वि ष्म स स म य का र्य, वि ना ण म प ग कृ मि ४॥ म द न व म द ह नि, म द ना रु नि दा प्र धी। ना सो ध्य
 म द ना किं कि, रु स्या ली कृ ग या म द ४॥ व न प्र कृ लि ग व द्धि, द ह म्भ ला नि प्र कृ मि। स म ल म ल ने
 य नि, आ पा ष्म म द ण ग ल ४॥ ४॥ स्तू ल ला मा व ली व द्, क न्या व व द्ध रा षी धी। उ व जा नि व द्ध

आ धि, द्रु ग ४ प नि व र्ज य नृ शा च रु स्य रु द प च दा षा न् की र्त्त न। क ह ले य कृ मि व द्ध गः
 प नि व र्ज य नृ ॥ अ ष्म यानं ग जो म ल ४ म व ष्म वि व प्र सु नि का। ग थ अ नृ प च दा षा द्रु ग ४ प नि
 व र्ज य नृ ॥ द्रु ज न सा दा मि गु, प च स्या मि च ना स्त्रिय। र म जी र्ध व म्भ जी र्ध ४ द्रु ग ४ प नि व र्ज
 य नृ ॥ न वि ष्म स द मि गु स्य, मि गु स्या पि न वि ष्म स नृ। क दा चि त्कृ पि ना मि गु, स व र्ध उ डी प्र काः
 ग य नृ ॥ न वि ष्म स द वि ष्म स वि स्या स नृ व वि ष्म स नृ। वि ष्म सा द्रु य मा त्य नृ मूल नृ व नि रु
 क नी ॥ न दी ना न र्वा ना ४ १२ मि ना ग म्भ या धि ना। वि ष्म स नृ व क र्त्त वी स्त्री ष पा ड कृ
 ल षू व ॥ न दी ती ष ष्य व द्धा, या च ना नी नि च ण या। स म नृ च हि ना जा जा, न रु व नि चि या।

युव ४॥ ॥ यदीच्छास्वर्गिणीं गीतिगुणनकाजयन्। द्यूतमप्यथागच्छ पञ्चाङ्गदाचरण
न ॥ न कुर्याद्द्वयविष्णुसं न कुर्याद्बलविष्णुहं। आत्मनापि नथाकाधं मित्रं वचनकाजयन्॥ १२
कूनयंमन्त्रिजाज्ञानं विप्रश्च वृषलीपनि। युवाजिनं वृणुतुष्टं न सवन्ति सदा वृषे ४॥ ॥ कूर्मे
न्ति नास्ति विस्वासं कुरायां कुरावणि। जीवे च नास्ति निर्वहं कुराणा नास्ति विविगं ४॥ ॥ ना
स्ति सख्यं सदा चोच नानाभव वष जीय गो। मद्यपास हृदनास्ति द्यूतकालं गुणनहि॥ ॥ दोवि
यो विप्रमन्त्रिश्च दपत्योऽपुत्रमिषया। अन्तर्न वगन्तु ह्यस्य वष रुस्य व ४॥ ॥ लाकयाणा
यं लज्जा दाक्षिण्यं लागणालना। पश्चयगुनविशंग न कुर्यात्तुगसंगमि ४॥ ॥ नाञ्जनं पुत्र

गायानि वकल्यश्च वदन्तु। न नानीस्ति च वदिस्यात्तमूर्खसंस्कृतं वदन्॥ ॥ मद्यलयाग्निशय
प्यश्वाधिशापसुथेववा पुनर्वदेत्तयस्मात्तस्माच्च वचनकाजयन्॥ ॥ उदङ्गा ४ कहले ४ कधु द्यूतमद्य
पुनन्त्रिनिद्रामेधून आलस्यं सवंगमहि वदेत् ४॥ ॥ पञ्चाङ्गापञ्चस्वश्च पञ्चिवादे पञ्चस्य वाप
पिहास्यं पुत्रस्मान् यत्नग ४ पञ्चि वदेयन्॥ ॥ पञ्चाङ्गकार्ये हन्ता च पुण्यं द्रुपियवादिनं। वदे
यत्तो दृगमिर्गु विषकूरुप्रयामूर्ख ४॥ कदम्बश्च कवलिश्च कुरायां कूनदीनथा। कदवी व
कुराश्च वृजे यस्य छिन्न ४ सदा ४॥ ॥ उदङ्गा यदि चूयद्य न म्हायदि गिली रुमा। एवमपाली
मनिका च वृजे नीया ४ पुनन्त्रिय ४॥ यष्कार्येषु विदेषु सहस्रं विरुलादय। विपरिषूमांदा

वाऽपि वड्डि वड्डि ॥ १॥ रुकारु कसम दस्य, कार्यो कार्ये ॥ तुल्यतां। सदा कार्ये सुद हा, रुग
 र्वा सवदा वृत्ति ॥ २॥ रुग वाम कली नानां, जाजाप यापि जीविनां। रुग वाम नानां, कृत्याय व २०
 पका निधमं ॥ ३॥ यद पा नां रुयं वान ॥ यद ना नि शाया रुयं। यद ना नां रुयं वडा, जनु ना द्वि प दा
 रुयं ॥ ४॥ मागाय दि वि र्ष दशा, पिना वि क्रिय न सुगं। जाजा क या नि व न्याय, काम गान रु वि ष्य
 ति ॥ ५॥ य गु जाजा स्य य ॥ य स म क्रि सु पू या हि न। गगु हं कि क नि ष्या मि, य ना ज हां ग ना रु य ॥
 ॥ वि ष्या लि लि गाय स्य, ल ला ट रु न मा लि का। दे वा पि न हि न। क्रानि, स लि र्थ लि लि गाय न
 ॥ क र्मे दा हि प धान न, वृद्धि ना किं पु या ज न। पा षा ध स्य कृ ना वृद्धि, रु न दे वा ॥ रु वि ष्य ति ॥

न
 क र्मे ष्य पि पु धा ना नि सु त्रि क र्ष ॥ १॥ रु ग हा व नि ष द रु ल गे न पि जा कि द् ॥ २॥ रु व हा नि नी ॥ ३॥ हा
 न रु ल रु व रु सि, दा बा पि रु द स रु मि। ४॥ ५॥ पि दा ष नां या नि, क की रु न वि ष्या ग पि ॥ ६॥
 कि क या नि न ४ या रु ॥ ७॥ ज मा न ४ स क र्मे हि। पा य ने व म नू ष्या ॥ ८॥ वृद्धि क र्मे नू सा लि नी ॥
 रु ल स्य रु व धं दानं, स ए क रु स्य रु व धं। ९॥ रु रु व धं क र्मे रु व धं ॥ १०॥ किं पु या ज नं ॥
 व नि र्ग रु व धं मी, रु मा ध पु ष्या रु व धं। ११॥ रु ल रु व धं वृं सां प नी नां रु व धं क या ॥ १२॥ न रु
 रु व धं व न्दा, ना नी धं रु व धं य नि ॥ १३॥ य थी वी रु व धं जा जा ॥ १४॥ लं स वं रु व धं ॥ १५॥ स रु ना म
 पि व ॥ १६॥ न नी चा मा न म रु म ॥ १७॥ क र्मे पि या द घा न न, का ली य स्य वि रु व धं ॥ १८॥ रु वि रु

२२

23

आर्य समाज
ARY SAMAJ

2.115

